पाठ – 14

पादपों एवं जन्तुओं का आर्थिक महत्व

आर्थिक वनस्पति विज्ञान :– आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण और उपयोगी पदार्थों के अध्ययन को आर्थिक वनस्पति विज्ञान कहते है।

आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पादपों को निम्न वर्गों में बांटा गया है।

(1) खाद्य पादप :– अनाज, दाल, तेल, मसाले, सब्जिया, फल

(2) औषधियां पादप :– अश्वगंधा, अफीम, सर्पगंधा, गुग्गल

(3) इमारती काष्ठ पादन :– सागवान, शीशम, रोहिड़ा, खेजड़ी।

(4) रेशे संबंधी पादप :– कपास, जूट, नारियल।

अनाज :– (1) गेहूं :– ट्रिटिकम एस्टाइवम

(2) चॉवल – ओराइजा सेटाइवा।

(3) मक्का – जिआ मेज

दाले :– (1) चना – साइसर ऐराइटिनम

(2) अरहर – केजेनस केजन

(3) मटर – पाइसम सेटाइवम

(4) सोयाबीन – ग्लाईसीन मैक्स

मसाले :– काली मिर्च, जीरा, लाल मिर्च, सौंप, धनिया, जीरा, लौंग, हल्दी आदि।

पेय पदार्थ :– चाय – केमेलिया साइनेन्सिस

कॉफी :– कॉफिया अरेबिका

साधारण नाम	वैज्ञानिक नाम	उपयोगी भाग	एवं रूप
गाजर	डाकस कैरोटा	जड़	सब्जी
मूली	रेफेनस सेटाइवम	जड़	सब्जी
आलू	सेलेनम टयुबरोसम	तना	सब्जी
पालक	स्पाइनेसिया ओलेरेसिया	पत्ती	सब्जी
फूल गोभी	ब्रेसिका आलेरेसिया	पुष्प	सब्जी
टमाटर	लाइकोपर्सिकोन एल्कुलेन्टम	फल	सब्जी
आम	मैंजीफेरा इंडिका	फल	फल
पपिता	केरिका पपाया	फल	फल
केला	म्युजा पेराडिसियेका	फल	फल

औषधीय पादप :– (1) हल्दी – कुरकुमा लौंगा

(2) ग्वारपाठा – एलोयवेरा

(3) अफीम – पेपेवर सोम्नीफेरम

(4) सर्पगन्धा – रॉवल्फिया सर्पेन्टाइना

(5) कुनैन – सिनकोना आफिसिनेसिस

रेशे उत्पादन :– (1) जूट, कपास – गोसिपियम जातियॉ

(2) नारियल – कोकोस जुन्शिया

इमारती काष्ठ– (1) खेजड़ी – प्रोसोपिस सिनेरेरिया (**राज्य वृक्ष**)

(2) रोहिड़ा – मारवाड़ सागवान/(**राज्य पुष्प**) (टेकोमेला अण्डूलेटा)

www.teachergyan.com
Vivaan Classes

जन्तुओं का आर्थिक महत्व :–

मधुमक्खी पालन (एपीकल्चर) :– (1) शहद एवं मधु मोम प्राप्त करने के लिए मधुमक्खी पालन एक लाभकारी व्यवसाय है।

(2) इसके पालन से खेतों में परागण की क्रिया तेजी से होती है। जिससे फसल वृद्धि होती है।

(3) शुद्ध शहद को परिरक्षक के रूप में उपयोग किया जाता है।

श्रम विभाजन के आधार पर तीन प्रकार की मधुमक्खीयां होती है – रानी, नर,श्रमिक।

रानी मक्खी:–एक कोलोनी में एक ही रानी मक्खी होती है।जो अंडे देने का काम करती है।

नर मक्खी :– इसका काम केवल रानी मधुमक्खी का गर्भदान करना है।

श्रमिक मक्खी (कमेरी) :– इनका कार्य फूलों का रस इकट्ठा करना होता है।

रेशम कीट पालन :– रेशम कीट की जाती का नाम बॉम्बिक्सबोराई (सेरी कल्चर) है। रेशम उत्पादन के मुख्य तीन देश है चीन, जापान एवं भारत।

रेशम कीट के जीवन चक्र में निम्न अवस्थाऐं होती है।

(1) पूर्ण अवस्था :– एक वयस्क रेशम कीट में पंख 4 या 5 इंच लम्बे होते है। ये केवल प्रजनन करते है।

(2) अण्डे :– मादा 300 से 600 छोटे–छोटे अण्डे देती है।

(3) लार्वा :– इन्हे केटर पिलर कहते है। ये शहतूत की पत्तियों पर रहते है। इनमें स्थित एक जोड़ी लार ग्रंथियों से लार निकलती है जो हवा के संपर्क में आकर सूखकर धागा बन जाती है।

(4) प्यूपा :– अब कैटर पिलर इस धागे को अपने चारों ओर लपेटता हुआ कोकून का निर्माण करके उसके अन्दर बंद हो जाता है। प्यूपा कोकून से बाहर निकलकर वयस्क बन जाता है।

रेशम बनना :– जब केटरपिलर कोकन में बंद हो जाता है तो कोकून को गर्म पानी में डालने से केटर पिलर गर्म पानी में मर जाता है एवं कोकून से लगभग 1000 से 1200 मीटर लंबा रेशम का धागा प्राप्त होता है।

लाखकीट संवर्धन :– लाख के व्यापारिक उत्पादन के लिए लाख के कीटों का पालन लाख संवर्धन कहलाता है।

लैसीफर लैका नामक लाख कीटों की लक्ष ग्रंथियों द्वारा स्त्रावित रेजिन युक्त रालअम्ल पदार्थ को लाख कहते है।

लाख उत्पादन की निम्न दो विधियॉ है –

(1) पुरानी देशी विधि :– इसमें लाख के पौधे को काटकर ही लाख एकत्रित की जाती है। इससे आगामी फसल को भारी हानि होती है।

(2) आधुनिक विधि :– लाख एक साथ मिलकर बारी बारी से निकाली जाती है इसमें फसल की हानि नहीं होती है। इसका अनुसंधान रांची, बिहार के अनुसंधान केन्द्रों में किया जाता है।

मछली पालन :– (1) मछली आसानी से प्राप्त होने वाला प्रोटीन व उच्च पोषक युक्त और आसानी से पचने वाला भोजन स्त्रोत है।

(1) मछलियों के प्रकार :– रोहू, कतला, मृगल, कामन, कार्प आदि।

(2) विकासशील देशों में करोड़ों लोगों को मछली पालन से रोजगार मिलता है।

(3) मछली में आयोडीन, विटामिन–ए,डी प्रचुर मात्रा में होते है।

(4) मछलियों के लीवर से तेल प्राप्त होता है।

पशुपालन :– कृषि विज्ञान की वह शाखा जिसके अन्तर्गत पालतु पशुओं में भोजन, आवास, स्वास्थ्य, प्रजनन आदि का अध्ययन होता है उसे पशु पालन विज्ञान कहते है।

डेयरी उद्योग :– बड़ी संख्या में गाय, भैंस, बकरी को पालकर बड़े पैमाने पर दुग्ध उत्पादनों के व्यवसाय को डेयरी उद्योग कहते है।

भैंस की नस्ले :– जाफराबादी, मुर्रा

गाय :– गीर, साहिवाल

बकरी :– सिरोही, बारबरी

मुर्गी पालन :– (1) मुर्गी पालन से अण्डे और चिकन के रूप में भोज्य पदार्थ प्राप्त होता है।

(2) इसमें प्रचूर मात्रा में प्रोटीन होती है।

(3) मुर्गी पालन बहुत सारे लोगों के लिए आय और रोजगार का साधन है।

(4) अण्डों से वैक्सीन अनुपयोगी अंडो से पशु आहार एवं खाद्य बनाई जाती है।

(5) भोजन :– पौष्टिक भोजन मक्का के रूप में आवश्यक है।

ऊन उद्योग :– भेड़ उतरी भारत में ऊन प्राप्त करने हेतु पाली जाती है।

भेड़ की नस्ले :– लोही, मारवाड़ी, नली, पाटनवाड़ी

प्रवाल (कोरल) :– यह एक प्रकार के रीढ़ रहित समुद्री जंतु है जिनके शरीर के अंदर या बाहर केल्शियम कारबोनेट का कठोर कंकाल होता है।

प्रवाल भिति :– समुद्रों में प्रवालों के लगातार मुकुलन और मृत प्रवालों में चूनेदार मक्बों के जमाव से बनी चट्टानों को प्रवाल भिति कहते है।

मोती संवर्धन :– (1) कृत्रिम तकनीक के माध्यम से सीपियों को पालकर उनसे मोती प्राप्त किया जाता है।

(2) मोलस्का संघ के जन्तु के द्वारा स्त्रावित पदार्थ के सेवन से निर्मित गोलाकर, सफेद, चिकने, चमकीले, कैल्शियम कारबोनेट का नाम मोती है।

(3) घोंघा अपने शरीर से निकलने वाले पदार्थ से एक कवच का निर्माण करता है।

(4) ओएस्टर जैसे मोलस्क अपने कवच के नीचे स्वयं की रक्षा के लिए मोती स्त्रावित करते है।

Vivaan Classes